Notes

35

संस्कृति पर संचार माध्यमों का प्रभाव

दूर-दराज बसे हुए संबंधियों और मित्रों के पास हमेशा आना-जाना संभव नहीं होता। हमें उन्हें संदेश भेजना और उनसे संदेश या सूचनाएँ प्राप्त करना आवश्यक होता है। सुदूर स्थानों में रहने वाले लोगों को लिखित या मौखिक संदेश भेजने के लिए संचार के विभिन्न माध्यम जैसे पत्र, तार (टेलीग्राम) तथा टेलीफोन हमारे काम आते हैं।

हम सभी दूरदर्शन (टी. वी.) देखते हैं, अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, और हम फिल्में देखने भी जाते हैं। हमारे साथी लोगों के पास ये विभिन्न संचार के साधन मौजूद हैं। भोजन और आवास की भौतिक आवश्यकताओं के अलावा अब मुनष्य की एक दूसरी मूलभूत आवश्यकता अपनी सूचना देने अथवा बात कहने की है। अपनी बात कहने या संदेश-आदान-प्रदान की उत्कंठा एक प्राथमिक आवश्यकता है और समकालीन सभ्यता के अनुसार जीवित रहने के लिए यह एक बड़ी आवश्यकता हो गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संचार माध्यम की परिभाषा बता सकेंगे, (स्पष्ट कर सकेंगे)
- संचार माध्यम के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- संस्कृति के विस्तार (फैलाव) में संचार माध्यमों की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे; और
- भारतीय समाज और संस्कृति पर संचार माध्यमों, विशेषरूप से दूरदर्शन, के प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

35.1 जन–संचार–माध्यमों का अर्थ और परिभाषा

एक स्थान या व्यक्ति से दूसरे स्थान या व्यक्ति तक सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों (अभिवृत्तियों) को आदान-प्रदान करने की कला संचार कहलाता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को, अपनी एक अथवा अधिक इन्द्रियों–दृश्य, वाणी (आवाज), स्पर्श, रस (स्वाद), बोलने अथवा गंध (सूंघकर) के द्वारा कोई संदेश भेजता है। जब हम हंसते हैं तो हम मित्रता की इच्छा की सूचना देते हैं; वह लहजा जिसमें हम ''नमस्कार'' (गुड मार्निंग) कहते हैं, शत्रुता से लेकर गहरी प्रसन्नता तक की हमारी सभी मनोदशाओं को दर्शा सकता है। हम बोलते अथवा लिखते समय जिन शब्दों का चुनाव करते हैं वे हमारे द्वारा अन्य व्यक्ति को दिए गए संदेश को प्रकट या व्यक्त करते हैं। जितने अधिक प्रभावशाली तरीके से हम उन शब्दों का चुनाव करते और व्यक्त करते हैं, उतनी ही अच्छी हमारी उस व्यक्ति के साथ वार्तालाप भी होती है।

समकालीन समाज में एक व्यक्ति से दूसरे के बीच केवल सीधे वार्तालाप के जरिए कार्य संपादन करना बहुत ज्यादा जटिल हो गया है। हमारे महत्वपूर्ण संदेशों के प्रभावशील होने के लिए उनका एक ही समय में बहुत सारे लोगों तक पहुँच जाना जरूरी है। उदाहरण के लिए, बिजली के बार-बार गुल हो जाने से नाराज एक गृहिणी अपने आस-पड़ोस के आधे दर्जन लोगों से ही संगठित होकर 'बायकाट' करने की बात कह सकेगी, पर उसका लिखा हुआ पत्र एक स्थानीय समाचार पत्र के संपादक द्वारा छापे जाने पर बहुत कम समय में सैकड़ों महिलाओं को उसके विचारों से अवगत कराएगा। हम एक अन्य उदाहरण लें, एक राजनेता जो चुनाव लड़ रहा है, यदि वह वोट प्राप्त करने की आशा में व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलकर जनसभाएँ तथा बैठक करता है तो वह अपने चुनाव अभियान में ढेर सारा समय लगायेगा। किन्तु दूरदर्शन या रेडियो को कुछ समय के लिए किराए पर लेकर तथा समाचार पत्रों में स्थान हेतु पैसा खर्च करके वह एक ही साथ हजारों मतदाताओं को अपना संदेश पहुँचा सकता है। जनसंचार एक ऐसा माध्यम है जो इसी लक्ष्य से विकसित हुआ है कि इनसे भिन्न-भिन्न स्थानों तथा समुदाय के विविध प्रकार के श्रोताओं को कम से कम समय में एक साथ ढेर सारी सूचनाएँ, विचार और दृष्टिकोण पहुँचाए जा सकते हैं।

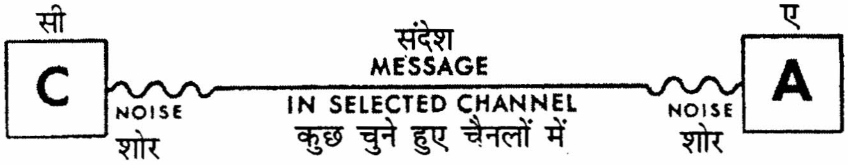

संचार प्रणाली- प्रेषक (सी) चुने हुए चैनल के माध्यम से श्रोताओं तक संदेश भेजने का स्थान (ए)

आओ अब, हम, जन-संचार माध्यमों को समझ लें। जन-संचार माध्यम विविध प्रकार के श्रोताओं तक सूचना, विचार दृष्टिकोण आदि को कुछ जन-संचार माध्यम के उपकरणों के द्वारा भेजने का तकनीकी (प्रौद्योगिकी) साधन हैं। एक प्रकार से, शब्द और चित्र एक ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा विचार और भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं पर इस माध्यम का अर्थ केवल इतने तक ही सीमित नहीं है। माध्यम का अर्थ है दोनों के मध्य की कोई चीज जो बीच में आती हो। उदाहरणतः एक क्रेता और विक्रेता के बीच में पैसा अदला-बदली का साधन बनता है। शिल्पकार के भावों को व्यक्त करने हेतु पत्थर एक माध्यम है। विचारों और भावनाओं को भेजने या पहुँचाने का संचार-माध्यम ऐसी कोई भी वस्तु बन सकती है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि सूचनाओं का भेजना या संचार करना एक ऐसा कार्य या प्रक्रिया है जिसमें सूचनाएँ, विचार, संवेग कौशल आदि, मौखिक या अ-मौखिक माध्यमों (शब्दों, चित्रों, रेखाचित्रों, ग्राफों, हाव भावों तथा अन्य प्रक्रियाओं (आदि) द्वारा भेजा जाना निहित है।

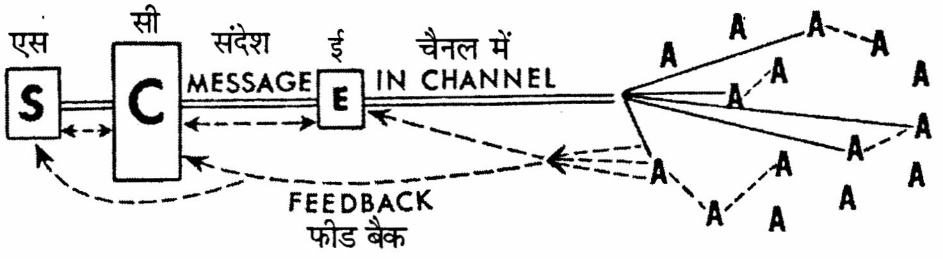

''जन संचार-माध्यम द्वारा एक क्षण में दिए गए संदेश या उदाहरण'' स्त्रोत (एस) प्रेषक द्वारा भेजा गया संदेश (सी) संपादक द्वारा नियंत्रित चैनलों में (ई) कुछ श्रोता सदस्य (ए) कुछ सीधे, कुछ अपरोक्ष सुन रहे हैं, कुछ ध्यान नहीं दे रहे, संचार-मार्ग से कुछ प्रतिक्रियाएँ होना फीडबैक है।)

पाठगत प्रश्न 35.1

निम्नलिखित शब्दों से आप क्या समझते हैं? प्रत्येक के विषय में एक वाक्य में लिखिए:

(अ) जन-संचार (मास कम्यूनिकेशन)

(ब) अंतरावैयक्तिक संचार (इंट्रा परसनल कम्युनिकेशन)

(स) अन्तर व्यक्तिगत संचार। (इंटर परसनल कम्यूनिकेशन)

(द) जन-संचार-माध्यम। (मास मीडिया)

35.2 संचार माध्यम के प्रकार

जन-समुदाय में श्रोताओं को बहुत से साधनों से संदेश संचारित किया जा सकता है। कई जन-संचार-माध्यमों में से कम से कम एक की आवश्यकता बिना महसूस किये मुश्किल से ही कोई दिन गुजरता होगा। जन-संचार माध्यमों के विविध प्रकार निम्नांकित है,

1. सबसे प्राचीन माध्यम छपे हुए शब्दों और चित्रों का है जिनमें निहित संदेश दृष्टि की इंद्रिय से सुलभ होते हैं। ये समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पैम्फलेट, तथा खुले डाक-परिपत्र होते हैं। इन सभी को प्रकाशित (छपे हुए) माध्यम या 'प्रिट मीडिया' कहते हैं। समाचार-पत्रों में, समुदाय, राष्ट्र और कभी-कभी विश्व-समुदाय पर भी प्रकाश डाला जाता है। पत्रिकाओं में सूचनाओं की पृष्ठभूमि, मनोविनोद, स्पष्ट विचार और विज्ञापन-प्रकाशित होते हैं। पुस्तकों में विषयों के विस्तृत विवेचन और विस्तारपूर्वक परीक्षण के साथ-साथ मनोविनोद भी होता है। पैम्फलेटों और सीधे डाक-परिपत्रों में व्यापारिक और नागरिक संगठनों के विचार और दृष्टिकोण होते हैं।
2. ध्वनि के माध्यम से संचारित जन-संचार साधन रेडियो है। रेडियों द्वारा मनोरंजन, समाचार और विचार, चर्चाएँ, तथा विज्ञापन संदेश सुनने को मिलते हैं और वह श्रोता को घर बैठे जन-समुदाय में घटित होने वाली घटनाओं का सीधा संदेश दे देता है। यह एक इलैक्ट्रोनिक मीडिया (विद्युत-चुम्बकीय) संचार माध्यम है।
3. दूरदर्शन द्वारा प्रसारित गतिमय चित्र दृश्य और श्रव्य इंद्रियों को बहुत रोचक एवं आकर्षक लगते हैं। दूरदर्शन के प्रोग्राम शिक्षाप्रद, सूचनाप्रद, और प्रचुर मात्रा में मनोरंजन तथा विज्ञापन-संदेशों से भरपूर होते हैं। फिल्मों से सूचनाएँ मिलती हैं, उनसे मनोरंजन होता है तथा वे अपने अनुरूप सोचने-समझने के लिए प्रेरित करती हैं। दूरदर्शन भी विद्युत चुम्बकीय संचार-माध्यम (इलैक्ट्रोनिक मीडिया) है।
4. **संचार साधानों की कुछ महत्वपूर्ण ऐजन्सियाँ जो जन संचार माध्यमों से ही अनुबंधित या जुड़ी हुई हैं वे निम्नलिखित हैं-**

i. प्रेस संगठन समाचार एकत्रित करते हैं और समचार-पत्रों, दूरदर्शन चैनलों, रेडियो स्टेशनों तथा समाचार पत्रिकाओं को बांटते हैं।

ii. व्यावसायिक संगठन समाचारों की पृष्ठभूमि और तस्वीरें, टिप्पणियाँ तथा मनोरंजक सामग्री (फीचर्स) समाचार-पत्रों, दूरदर्शन, रेडियो और पत्रिकाओं को प्रदान करते हैं।

iii. विज्ञापन एजेंसियाँ एक ओर अपने व्यावसायिक ग्राहकों के विज्ञापन लेकर उनकी सेवा करते हैं तथा दूसरी ओर जन-संचार-माध्यमों को अपनी सेवा प्रदान करते हैं।

iv. कम्पनियों और संस्थाओं के विज्ञापन-विभाग एक व्यापारी की भूमिका अदा करते हैं तो जन-संपर्क विभाग छवि-निर्माण हेतु सूचनाओं के प्रसार या फैलाने का कार्य करते हैं।

v. जन-संपर्क- संदर्शन फर्में और जन-प्रचार संगठन अपने ग्राहकों की तरफ से सूचनाएँ प्रदान करते हैं।

vi. शोधकर्त्ता समूह संदेश के प्रभाव को संतुलित एवं उपयुक्त बनाने में सहयोग देते हैं और जनसंचार माध्यमों को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने हेतु अपने सुझाव देते हैं। जन-संचार माध्यमों का प्रमुख लक्ष्य (उद्देश्य) मात्र साधारण मनोरंजन नहीं है। जन-संचार- माध्यमों के दो प्रमुख कार्य हैं- समाचारों की रिपोर्टिंग करना और उन समाचारों पर आधारित उनकी व्याख्याएँ और विश्लेषण प्रस्तुत करना। जन-संचार-माध्यमों में समाचारों, विचारों और मनोरंजन के कार्यों का परस्पर निकटतम संबंध होता है और विविध संचार-माध्यम एक दूसरे पर पूर्ण रूप से, आश्रित होते हैं।

पाठगत प्रश्न 35.2

कालम 'अ' तथा 'ब' का मिलान कीजिए-

'अ'	'ब'
(अ) रेडियो....................	श्रव्य-दृश्य
(ब) समाचार-पत्र............	श्रव्य
(स) फिल्म......................	प्रिंट मीडिया (छपा हुआ संचार (माध्यम)

35.3 संस्कृति के प्रसार (विस्तार) में जन-संचार माध्यमों का प्रभाव

उद्भव के स्थान से संपूर्ण क्षेत्र और आस-पड़ोस के क्षेत्रों अथवा पड़ोसी समुदायों में सांस्कृतिक भावना का फैल जाना ही प्रसार या विस्तार कहलाता है। हमने पहले पाठ में पढ़ा है कि संस्कृति में 'खान-पान, पहनावा (वेशभूषा), धार्मिक विश्वास, नृत्य और भाषा आदि सम्मिलित होते हैं।

गैसीय पेय (कोका कोला आदि), चाय, कॉफी, विभिन्न प्रकार की सिगरेटों, विभिन्न किस्मों के साबुनों, डिटर्जेंटों, सिर में लगाने वाले तेलों, शैम्पू, दांतों के पेस्ट, दांतों के ब्रुश तथा बालों को डाई करने की आदतों आदि का तीव्र प्रसार या फैलाव निश्चित रूप से, विगत समय में, दूरदर्शन के प्रभाव के कारण ही है। उदाहरणत:, दूरदर्शन पर दिखाए गए व्यावसायिक अंतरालों के समय के दृश्यों की चहल-पहल ने, निश्चित रूप से गैसीय पेयों के विविध प्रकारों (जैसे कोका कोला, पेप्सी, फ्रूटी आदि) का जीवन के लगभग हर क्षेत्र में भारी तादाद में उपयोग को बढ़ावा दिया है। जन-संचार माध्यमों द्वारा व्यापक प्रदर्शन के कारण, दक्षिण भारतीय नाश्ता माने जाने वाली 'इडली और डोसा,' अब लगभग, अन्तरराष्ट्रीय बन गए हैं। पंजाब और उत्तर-पश्चिमी भारत का एक सामान्य पहनावा- 'सलवार और कमीज' देश के हर स्थान में फैल चुका है। विगत शताब्दी के मध्य में, सिनेमा ने "संतोषी मां" की पूजा की रिवाज को फैलाने में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गत सदी के अंतिम दशकों में दूरदर्शन (छोटे परदे) ने जाति, धर्म, समुदाय, उम्र और लिंग के भेदों से परे लगभग हर व्यक्ति को 'रामायण' और 'महाभारत' के संदेशों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नृत्य की दो प्रकारों जैसे-'भरत नाट्यम' और 'ओडिसी' के उनके उद्भव के केन्द्रों से परे, प्रसारित करने या फैलाने में निश्चित रूप से पहले रेडियो, फिर सिनेमा और अंतत:, पूर्णत: दूरदर्शन का प्रबल प्रभाव है। देश के विस्तृत भू-भाग में हिन्दी भाषा का प्रसार मुख्य रूप से हिन्दी सिनेमा के कारण हुआ है। यह विशेष रूप से 'विविध भारती" और "बिनाका" जैसे कुछ विशिष्ट रेडियो प्रोग्रामों के माध्यम से रेडियो पर लगातार प्रसारित हिन्दी गीतों के कारण हुआ है। बाद में, दूरदर्शन ने भी सभी श्रेणियों के लोगों को, व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज हम देखते हैं कि हमारी दैनिक गतिविधियों में भी, हमारी मातृ भाषा के कुछ शब्द, दूरदर्शन पर दिखाए गए कुछ भाषिक प्रयोगों के अनुसार घुल-मिल गए हैं जैसे "ब्रेक के बाद" आदि। दूरदर्शन पर अपने माता-पिता के साथ व्यवहार करते हुए प्रदर्शित बच्चों की तरह हमारे बच्चें भी बर्ताव करते हैं। ये सभी जन-संचार-माध्यमों के व्यापक प्रभावों के फलस्वरूप सांस्कृतिक प्रसार या विस्तार के ही उदाहरण हैं।

पाठगत प्रश्न 35.3

एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

(अ) सांस्कृतिक विस्तार क्या होता है?

(ब) संस्कृति के दो मदों के विषय में संक्षेप में लिखिए?

(स) दूरदर्शन के विज्ञापनों में जिन्हें आप ज्यादातर देखते हैं, किन्हीं दो गैसीय पेयों के ब्रांडों के नाम लिखिए?

(द) सिनेमा (फिल्म) और दूरदर्शन के माध्यम से फैलने वाली धार्मिक रीति का एक उदाहरण दीजिए?

35.4 दूरदर्शन का प्रभाव

एक नगरीय समुदाय में, जहाँ की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी भाषा की अपेक्षा अन्य भाषा में वार्तालाप करता है, वहाँ भाषा-रचना अपनाने में दूरदर्शन का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

दूरदर्शन जैसा एक दृश्य माध्यम, बोले या लिखे जाने वाले शब्दों की अपेक्षा सांस्कृतिक विचारों को सीखने या सिखाने के लिए, एक अधिक उपयोगी साधन समझा जाता है। फिर भी, दूरदर्शन का प्रभाव सदा सकारात्मक या पॉजीटिव ही नहीं होता। आओ, अब हम उन प्रभावों की चर्चा करें जिन्हें दूरदर्शन हमारे दैनिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करता है।

प्रात: काल जैसे ही हम जागते हैं हममें से अधिकांश एक प्याला चाय पीते हैं। यदि हम पीछे की ओर देखें कि हमें यह लत कैसे लग गई। संभवत: यह आदत प्राचीन चीन में खोजने से मिलेगी। कैसे भी हो, इस आदत ने जिस हद तक विश्व के लगभग हर भाग में फैल चुका है। इसके लिए दूरदर्शन के व्यावसायिक प्रदर्शनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सकारात्मक पक्ष - दूरदर्शन के प्रोग्राभ बहुत ज्यादा ज्ञानप्रद एवं शिक्षाप्रद होते हैं बशर्ते कि हम यू.जी.सी. प्रोग्राम, क्विज प्रोग्राम, तथा सामूहिक परिचर्चाएँ देखें। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान, सूचना तथा समझ प्राप्त की जा सकती है।

आजकल हमारे देश में हिंदी घर-घर की भाषा हो चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति की हिन्दी अपनी मातृभाषा न होते हुए अर्थात उड़िया, बंगाली या तेलगू होते हुए भी, हिंदी में बोलना प्रारंभ कर देता है। यह केवल लगातार दूरदर्शन देखने के कारण ही है। हम

Notes

दूसरों के साथ, स्वतंत्र रूप से, घुल-मिल सकते हैं, अपने विचारों और दृष्टिकोण का अपने निजी समूह के अतिरिक्त दूसरे लोगों से भी आदान-प्रदान कर सकते हैं। इस तरह, दूरदर्शन अपने परिवार, मित्रों तथा अन्य लोगों से संपर्कों को मजबूत बनाने या बढ़ाने के लिए एक आवश्यकता बन गया है।

यह जानना कि विश्व में और हमारे आसपास क्या हो रहा है दूरदर्शन हमारी बहुत बड़ी आवश्यकता को पूर्ति कर देता है। दूरदर्शन दक्षिण भारत से उत्तर भारत के विभिन्न समुदायों के पहनावे, लोगों के भोजन (खानपान) को दिखलाता है और देश के विभिन्न घरों के लोगों के पूजा-पाठ, और धार्मिक रीति-रिवाजों को भी प्रगट करता है।

दूरदर्शन सभी श्रेणियों के लोगों के मनोरंजन का साधन है। यह अकेले एवं एकाकी व्यक्ति, जैसे बूढ़ों तथा गृहिणियों के लिए साथी का काम करता है। घर पर रहने वाले परिवार के सदस्यों के लिए यह बातचीत के लिए अनेक विषय प्रदान करता है। कामकाजी लोगों का ध्यान जीवन की सामान्य एवं दैनिक समस्याओं से आसानी से हटाकर खिंचाव या तनाव मुक्त करता है। आज दूरदर्शन भारतीय परिवारों और विवाह की रीतियों तथा भारतीय संस्कृति पर भी नजर रखता है और परस्पर समझ-बूझ एवं सहनशीलता पर बल दे रहा है। भारत में परिवार एवं विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं ने इस विचार को सदा मजबूत बनाया है। संयुक्त परिवार प्रणाली ने इन जीवन-मूल्यों को पोषित किया है। दूरदर्शन के 'सीरियलों' में ऐसे आदर्श और जीवन-मूल्य दिखाए जाते हैं जिनसे हम उनके द्वारा अपने को जान पहचान सकते हैं और तुलना के रूप में उनका उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दूरदर्शन, आत्म-विश्वास, स्थिरता और पुनर्विश्वास की स्थापना के लिए एक आवश्यकता बन गया है।

नकारात्मक पक्ष - इन सब बातों के बावजूद, कुछ ऐसे क्षेत्र भी है जहाँ दूरदर्शन का प्रभाव सकारात्मक (अनुकूल) नहीं पड़ा है। यह पाया गया है कि कामुकता (इन्द्रियों की आसक्ति) के नग्न प्रदर्शन, आपराधिक प्रसंग, और समाज के असामाजिक तत्वों द्वारा दिखाई गई बर्बरता, दादागिरी, सामान्यत: युवकों पर एवं विशेष रूप से, बच्चों पर सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। फिल्मों, 'सिरियलों', विज्ञापनों और भेंट-वार्ताओ आदि, जो दूरदर्शन पर दिखाए जाते हैं, के दृश्य और विषय प्राय: हमारे उन जीवन-मूल्यों और आदर्शों की अवमानना करते हैं जिनके लिए हमारी परंपरागत राष्ट्रीय संस्कृति विख्यात है। पर, ये कामुक (इन्द्रियासक्ति के) नंगे प्रदर्शन, आपराधिकता, दादागीरी, मार-काट, भद्दे प्रदर्शनों तथा इसके अनेक अन्य नकारात्मक पहलुओं के द्वारा दर्शकों को लज्जित कर देते हैं।

बच्चे बहुत ज्यादा समय से दूरदर्शन देख रहे हैं। इस प्रकार उनके समुचित पढ़ने-लिखने, सामाजिक मेल-जोल द्वारा (बनने) और दूसरी मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेने के अभाव के कारण उन पर नकारात्मक (प्रतिकूल) प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समाज में अपराध और हिंसा के बढ़ते हुए दौर में, दूरदर्शन के प्रोग्रामों और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संबंधों पर हुए अध्ययन से रोचक जानकारी प्राप्त हुई है। अधिक स्पष्ट रूप से, समझना प्रारंभ कर रहे हैं। भारत के तीन मैट्रोपॉलिटन महानगरों में दूरदर्शन के प्रोग्रामों पर हुए ताजा अध्ययन की रिपोर्ट के निम्नलिखित परिणाम मिले हैं-

इन महानगरों के 3500 बच्चों में से 79 प्रतिशत बच्चे शिक्षा विषयक प्रोग्रामों की अपेक्षा मनोरंजन के लिए कार्टून नेटवर्क देखना पसंद करते हैं। उनमें से 11 प्रतिशत 'राष्ट्रीय भूगोल चैनल' पसंद करते हैं, केवल आठ प्रतिशत पारिवारिक सीरियल और 2 प्रतिशत की किसी प्रोग्राम में कोई विशेष अभिरुचि नहीं है। सबसे ज्यादा संख्या में बच्चे मनोरंजन चैनल के रूप में कार्टून नेटवर्क देखना पसंद करते हैं। अत: अब यह आवश्यक हो गया है कि कार्टून के चैनलों के द्वारा भारतीय सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों को टेलीकास्ट किए जाए। महाकाव्य रामायण, महाभारत, भगवद्‌गीता तथा पंचतंत्र की कहानियाँ कार्टून चैनलों पर दिखाए जाएँ। मनोरंजन चैनलों के द्वारा टीपू सुल्तान, शिवाजी और भगतसिंह आदि जैसी महान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कथाएँ बच्चों तक पहुँचें। भारतीय समाज के छोटे-छोटे सदस्यों के समाजीकरण के लिए दूरदर्शन, उत्तरोत्तर, एक संस्था के समान महत्वपूर्ण होता जा रहा है। उनके मानसिक विकास और उन्हें भारतीय जीवन-मूल्यों तथा भारतीय जीवनशैली सिखलाने में दूरदर्शन की भूमिका एक चौंकाने वाली गति से बढ़ रही है।

पाठगत प्रश्न 35.4

उत्तर 'ठीक' होने पर 'सत्य' और 'गलत के लिए' 'असत्य' हर प्रश्न के सामने लिखिए।

1. दूरदर्शन के प्रोग्राम सूचनाप्रद और शिक्षाप्रद होते हैं।
2. दूरदर्शन का मुख्य उद्देश्य साधारण मनोरंजन होता है।
3. दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' दोनों प्रभाव होते हैं।
4. दूरदर्शन के द्वारा, विश्व में और आस-पास क्या हो रहा है, हम जान सकते हैं।

आपने क्या सीखा

- आधुनिक मानव ने अपने संदेश भेजने के लिए बहुमुखी (संचार तंत्र) बनाई है।
- संचार-माध्यमों के उपयोग के द्वारा विविध प्रकार के श्रोताओं के पास सूचनाएँ, विचार तथा दृष्टिकोण आदि भेजने या पहुँचाने का जन-संचार माध्यम एक साधन है।
- संचार माध्यमों में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें (जिनमें से सभी को प्रकाशित माध्यम या 'प्रिंट मीडिया' कहते हैं), रेडियो एवं दूरदर्शन (विद्युत चुंबकीय माध्यम 'इलैक्ट्रोनिक मीडिया') तथा चल चित्र आते हैं।
- जन-संचार माध्यमों के द्वारा निभाई गई सबसे महत्वपूर्ण भूमिका संस्कृति का विस्तार या प्रसार है।
- धार्मिक समूहों तथा अन्य सैकड़ों समूहों के मानव-व्यवहार संबंधी कार्य और विश्वास प्रेस पुस्तकों और दूरदर्शन तथा रेडियो के प्रोग्रामों द्वारा, सतत, वर्णित और चर्चित होते रहते हैं।
- प्रेषक से श्रोताओं तक सूचनाएँ, विचार, दृष्टिकोण आदि के भेजे जाने का प्रौद्योगिक (तकनीकी) साधन जन-संचार माध्यम कहलाता हैं।
- सूचना और दूसरी विषय सामग्रियों को प्रस्तुत करने के तरीके व्यापक रूप से अलग-अलग होते हैं।
- विभिन्न संस्कृतियों को एक साथ लाने में जनसंचार माध्यम एक साधन होते हैं।
- सांस्कृतिक एकता के विकास में राष्ट्रीय और स्थानीय संचार-माध्यम महत्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा करते हैं।
- दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक'-दोनों ही प्रभाव होते हैं। पर 'सकारात्मक' प्रभाव सदा 'नकारात्मक' प्रभाव से ज्यादा प्रभावी होते हैं।
- वास्तविकता यह है कि दूरदर्शन का प्रभाव बुरा हो या अच्छा वह इस बात पर निर्भर है कि हम क्या देखते हैं और क्यों देखते हैं?

पाठान्त प्रश्न

1. जन-संचार-माध्यम का वर्णन कीजिए और उनके विभिन्न प्रकार लिखिए।
2. संस्कृति के विस्तार (प्रसार) में जन-संचार-माध्यमों की भूमिका पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

3. दूरदर्शन के 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' प्रभावों की विवेचना कीजिए।

4. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए:-

(अ) प्रकाशित माध्यम (प्रिंट मीडिया)

(ब) विधुत-चुम्बकीय माध्यम (इलैक्ट्रोनिक मीडिया)

शब्द कोष

अनुबंधित = जुड़ा हुआ या संबंधित

पूर्ववर्ती = पहला या पीछे का

अभियान = जन-प्रचार या प्रचार-कार्यक्रम

शिल्प (मूर्तिकला) = पत्थर तराशने की कला।

पैम्फलेट = बिना बंधे हुए छपी कागज के पन्ने।

सहमत करना = समझाना, विश्वास करना

प्रसार-विस्तार = प्रसार करने या फैलाने का कार्य।

अपरिष्कृत = प्राकृतिक अवस्था में, बिना सुधारा हुआ।

चहल-पहल = आमोद-प्रमोद-

व्यवसायीकरण = व्यवसाय संबंधी क्रिया।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

35.1

(अ) उसी लक्ष्य से विकसित किए गए संचार माध्यमों के उपयोग के द्वारा विविध प्रकार के श्रोताओं के पास सूचनाएँ, विचार तथा दृष्टिकोण आदि भेजने या पहुँचाने के लिए संचार-माध्यम एक साधन हैं।

(ब) यदि संचार या संदेश एक व्यक्ति का 'आंतरिक' मसला है तो वह 'अंतराव्यक्तिगत संदेश' कहलाता है।

(स) यदि संदेश की प्रक्रिया दो या ज्यादा व्यक्तियों से संबंधित होकर आमने-सामने घटित होती है तो वह 'अंतर-वैयक्तिक संचार' होती है।

(द) यह सूचना, विचार, दृष्टिकोण आदि के जन संचार-प्रेषक द्वारा श्रोताओं तक भेजे जाने का वह तकनीकी साधन है जिसमें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें

(प्रिंट मीडिया), रेडियो और दूरदर्शन (इलैक्ट्रोनिक मीडिया) तथा चल-चित्र शामिल होते हैं।

35.2

(अ) रेडियो श्रव्य

(ब) समाचार-पत्र- प्रिंट मीडिया (छपा हुआ)

(स) फिल्म - दृश्य श्रव्य

35.3

(अ) उद्भव के स्थान से संपूर्ण क्षेत्र और आस-पास के क्षेत्रों अथवा पड़ोसी समुदायों में सांस्कृतिक भावना का फैल जाना 'प्रसार' या 'विस्तार' कहलाता है।

(ब) भोजन, पहनावा या वेशभूषा

(स) पेप्सी, कोका कोला।

(द) संतोषी माँ।

35.4

(अ) 'सत्य'

(ब) 'असत्य'